आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2423 • उदयपुर, गुरुवार 12 अगस्त, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

दिव्यांगों के द्वार संस्थान

जयपुर में वितरित हुए कृत्रिम अंग एवं राशन किट

दिव्यांगता के क्षेत्र में अग्रणी नारायण सेवा संस्थान द्वारा हेरिटेज होटल ब्रह्मपुरी पुलिस स्टेशन के सामने, आमेर रोड, जयपुर में कृत्रिम अंग एवं राशन वितरण शिविर आयोजित हुआ। शिविर प्रभारी मनीष जी खण्डेलवाल ने बताया कि दिव्यांगजनों को ट्राईसाइकिल, व्हीलचेयर और वैशाखी, कैलिपर आदि प्रदान किये गये एवं गरीब परिवारों को निःशुल्क राशन दिया गया। शिविर में मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र जी पारीक, अध्यक्ष मंहतश्री बच्चनदास जी, विशिष्ट अतिथि श्री राघवेंद्र जी महाराज, श्री चमनगिरि जी महाराज, श्री अमर जी गुप्ता, श्री चिराग जी जैन, श्री घनश्याम जी सैनी, श्री लक्ष्मण जी समतानी, श्री चिरंजीलाल जी, श्री भूपेन्द्र प्रताप जी सोनी एवं कई गणमान्य मेहमान उपस्थित थे। संस्थान द्वारा नारायण गरीब परिवार राशन योजना के अंतर्गत 50 हजार परिवारों को राशन का लक्ष्य निर्धारित किया है इसके अंतर्गत 28 जरूरतमंद परिवारों को राशन किट दिये गये साथ ही दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग, कैलिपर वितरण किये। शिविर टीम में भंवरसिंह जी, हुकुमसिंह जी ने अपनी सेवाएं दी।

नरवाना (हरियाणा) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगों की सेवार्थ देश–विदेश में निःशुल्क शिविर लगाकर उन्हें राहत पहुंचाने का क्रम जारी है।

इसी क्रम में 25 जुलाई 2021 को मिलन पैलेस नरवाना, जिला– जींद (हरियाणा) में विशाल निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया।

नारायण सेवा संस्थान की नरवाना शाखा द्वारा आयोजित इस शिविर मे 37 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाये गये व 25 को कैलीपर्स प्रदान किये गये। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि मंहत श्री अजयगिरि जी महाराज, अध्यक्ष श्री भारत भूषण जी गर्ग– (पूर्व अध्यक्ष नगर परिषद्), विशिष्ट अतिथि डॉ. जयसिंह जी गर्ग (समाजसेवी), श्री राजेन्द्र जी गर्ग (स्थानीय शिविर प्रभारी), श्री प्रवीण जी मित्तल एवं श्री राकेश शर्मा (समाजसेवी) पधारे।

टेक्नीशियन श्री भंवर सिंह जी एवं श्री नरेश जी वैष्णव ने श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी),श्री भरत जी (सहायक), श्री मुन्ना जी (कैमरामेन) श्री रामसिंह जी (आश्रम साधक) आदि की टीम के साथ सेवाएं प्रदान की।

हटा राह का रोड़ा

रेल से कटे दोनों पांव, नारायण सेवा ने फिर चला दिया

कोरबा (छत्तीसगढ़) जिले के गांव केराकछार निवासी लम्बोहर कुमार एक बोरवेल कंपनी में काम करते हुए अपने परिवार के साथ खुश थे कि एकाएक जिंदगी की राह में रोड़ा खड़ा हो गया। वे अपने साथ घटी पूरी घटना का जिक्र करते हुए बताते हैं कि किसी काम से वे गांव से बिलासपुर जा रहे थे। रेलवे स्टेशन पर पटरी पार करते समय गिर पड़े और अचानक आई ट्रेन ने उनके दोनों पांव छीन लिए।

घटना ने परिवार को गहरे संकट में डाल दिया। इलाज में पैसा खर्च हो गया और काम–धंधा छोड़कर घर बैठना पड़ा। कुछ समय बीतने पर उनके एक मित्र पप्पू कुमार ने बताया कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान निःशुल्क कृत्रिम पैर लगाती है।

इस समाचार से उम्मीद की किरण दिखाई दी। वे पिता तीजराम के साथ उदयपुर पहुंचे। जहां उनके दोनों कटे पांव का नाप लेकर कृत्रिम पैर बनाए गए। वे कहते हैं अब मैं उन पैरों के सहारे आराम से चलता हूं और आजीविका से जुड़कर परिवार के पोषण में मदद भी कर रहा हूँ। नारायण सेवा संस्थान का बहुत–बहुत आभार।

कोरोना से बेहाल, भूख से परेशान

मेरा नाम प्रेम है। मैं किराणे की दुकान पर 8000 रुपये की नौकरी करता हूँ। घर में 2 बच्चे और पत्नी है। कुछ दिन पहले मुझे बुखार आया।

दूसरे दिन बच्चे को सर्दी–जुकाम हुआ और तीसरे दिन पत्नी को बुखार आ गया। खाने का स्वाद भी जाता रहा। हम सब घर वाले टेस्ट करवाने गए। दूसरे दिन हम सब की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटीव आ गई। हम सभी घर में होम आइसोलेट हो गए। हॉस्पिटल से दवाई आ गई।

घर आई भोजन थाली–

अब हमारे सामने समस्या यह थी कि खाना कौन बनाए? तभी पता चला कि पड़ोस में नारायण सेवा की गाड़ी रोज फ्री खाना दे जाती है। हमने भी संस्थान से 4 थाली भोजन का आग्रह किया। अच्छी सी पैकिंग में स्वादिष्ट भोजन हमारे घर भी शुरु हो गया। 14 दिन तक रोज भोजन आया हमारे घर। दवाई और भोजन की बदौलत हम सभी परिजन ठीक है। मैं संस्थान का जितना साधुवाद करूं उतना कम है।

एक वर्ष की चिकित्सा के बाद चला मोहित

बांका (बिहार) के गांव कर्मा निवासी राजीव कुमार सिंह के घर 26 जुलाई 2018 को दूसरी संतान का जन्म शल्य चिकित्सा से हुआ। जन्म के 6–7 माह बाद माता–पिता को पता लगा कि मोहित के दोनों पांवों में कमजोरी और टेढ़ापन है। यह देख वे चिंताग्रस्त हो गए। तभी उनके किसी मित्र ने बताया कि अपने बच्चे का इलाज उन्होंने भी नारायण सेवा संस्थान में कराया जिससे वो अब आसानी से चलने लगा है। इस जानकारी के बाद मोहित के माता– पिता भी बिना वक्त गंवाए मार्च 2019 में उदयपुर आए।

संस्थान की डॉक्टर्स टीम ने जांच की। बच्चे को जन्मजात क्लब फुट डिफोरमेटी रोग बताया और कहा कि 2 वर्ष तक इलाज चलेगा। फिर शुरू हुआ इलाज का दौर जिसके तहत 3 बार प्लास्टर चढ़ाया गया। दोनों पांव का एक–एक ऑपरेशन हुआ। उसके बाद 2 बार फिर प्लास्टर चढ़ाए और 3 बार अलग–अलग तरह के जूते पहनाकर उसे चलाया। मोहित के पांव अब सीधे हो गए हैं। वो दौड़ने भी लगा है। पूरा परिवार उसे चलता देख बहुत खुश है।

नारायण सेवा में मिले सेवा और प्यार

ख्यालीराम–बौद्धदेवा निवासी कनीगवा जिला बदायूँ (उ.प्र.) के खेतीहर साधारण परिवार का बेटा नरेशपाल (19) दोनों पॉव से लाचार था। करीब ढाई साल की उम्र में बुखार के दौरान लगे इंजेक्शन के बाद दोनों पाँव लगातार पतले होते चले गए। बिना सहारे के लिए उठना, बैठना और खड़ा रहना भी मुश्किल था। मथुरा में इलाज भी करवाया परन्तु हालत वही रही। नरेश ने बताया कि हरियाणा में उसके परिवार से सम्बद्ध व्यक्ति ने नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में पोलियो चिकित्सा की जानकारी दी जिसका इलाज भी यहीं हुआ था। नरेश के साथ आए उसके भाई अभय सिंह ने बताया कि ऑपरेशन हो चुका है। हम पूरी तरह संतुष्ट हैं। दुनियाभर में संस्थान का प्रचार होना चाहिए ताकि हम जैसे गरीब लोग भी इसका लाभ ले सकें। इसके संस्थापक पूज्य 'मानव सा.' के जुग–जुग जीने की प्रभु से कामना करते हैं।

मदद को तरसती पत्नी और मासूमों को नारायण सेवा ने संभाला

उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल जोर जी का खेड़ा निवासी मीना (बदला हुआ नाम) का पति अहमदाबाद में नमकीन की दुकान पर काम करता था। खराब तबीयत के चलते वो गांव आया और दो दिन बाद मृत्यु हो गई। एक तरफ पत्नी पति की मौत से दुःखी थी तो दूसरी तरफ तीन बेटियों और वृद्ध सासु माँ की चिंता सता रही थीं। असमय मौत से असहाय हुए परिवार के घर में न आटा है न दाल न ही राशन। भोजन को मोहताज परिवार पर ताऊते तूफान का कहर भी ऐसा बरपा कि टूटी–फूटी छत ही उड़ गई। परिवार के पांचों जन ने बारिश में भीगकर रातें गुजारी तो अब तेज धूप में तपने को मजबूर है।

नारायण सेवा संस्थान ने ली सुध– संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि आदिवासी क्षेत्रों में राशन बांटने वाली टीम को पता चला तो वे वहाँ पहुंचे। दुःखी परिवार को ढांढस बंधाया और मदद के लिये आगे आये।

हर माह मिलेगा राशन– मृतक मजदूर परिवार को संस्थान ने मौके पर ही महीने भर का आटा, चावल, तेल, शक्कर, चाय, दाल और मसाले दिए। हर माह परिवार का पेट भरने को राशन दिया जाता रहेगा।

संस्थान बनाएगा पक्की छत – बारिश, धूप और गर्मी झेल रहे परिवार की समस्या निदान के लिए पक्की छत का निर्माण संस्थान द्वारा करवाया जाएगा।

तीनों बेटियों को पढ़ाने में भी मदद– संस्थान ने मृतक मजदूर के परिवार को भरोसा दिलाया कि इन बेटियों को पढ़ाने में पूरी मदद की जाएगी।

सम्पादकीय

निन्दा एक नकारात्मक भाव है, इसे कहीं – कहीं दुर्गुण भी कहा गया है। क्यों ? निन्दा से निन्दक को सुख मिलता है, पर ध्यान रहे यह सुख हानिकर है। निन्दा करने से हमारा स्वभाव हर बात में निषेधात्मक चिंतन की ओर प्रवृत्त होने लगता है, जीवन में उदासीनता का उद्भव होने लगता है तथा प्रत्येक घटनाक्रम में हम निराशाजनक तथ्य ढूंढने के आदी हो जाते हैं। इन बातों से हमारा वैचारिक, मानसिक व व्यावहारिक स्तर निम्न से निम्नतर होने लगता है। हमने जिसकी निन्दा की उसे कितनी क्षति होगी पर हमें तो ये सारी क्षतियां होना सुनिश्चित हो गया न। निन्दा एक प्रकार का रस है। यह स्वाद जिसको लग जाता है वह निन्दा–नशेड़ी हो जाता है। अनजाने ही वह अपनी प्रगति में प्रतिरोध बन जाता है। निन्दा क्यों करें ? किसी के मूल्यांकन का अधिकार हमें किसने दिया ? यदि हमारी रुचि मूल्यांकन में ही है तो क्यों नहीं आत्ममूल्यांकन करें? आत्मविश्लेषण करें। सच तो यह है कि हम अपनी कमियों को ढकने के लिए औरों की निन्दा करने लगते हैं, ताकि अपने दोषों पर ग्लानि न हो। जीवन ऐसी शुतुरमुर्गी क्रियाओं से नहीं चलता है। हमें परनिन्दा का व्यसन छोड़ना ही होगा तभी आगे बढ़ पायेंगे।

कुछ काव्यमय

निन्दा का आनंद भी,
खूब उठाते लोग।
लेकिन मानव के लिये,
यह है भारी रोग।।
निन्दा करने से उठे,
मन में खोटे भाव।
जिसकी निन्दा हो रही,
उसको लगते घाव।।
नहीं किसी का लाभ है,
उभय पक्ष नुकसान।
निन्दक निन्दित व्यथित हो,
होती हानि समान।।
निन्दक निर्मल ना बने,
कर लो खूब प्रयास।
उसके सारे काम ही,
बन जाते उपहास।।
निन्दा की आदत बने,
बुरे भाव का मूल।
लगते बोये फूल हैं,
पर उगते हैं शूल।।

- बरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

कुछ धन नेकी में डालें

पकड़ने के लिए दौड़ पड़े–सब पीछे! कसूर! कसूर क्या है ? उसका। पकड़ो–पकड़ो की आवाज के आगे दौड़ रहा था। मटमैले कपड़े में लिपटा– जर्जर शरीर।

आखिर उसे पकड़ ही लिया पीछे दौड़ रहे दो–चार व्यक्तियों के मजबूत बाजुओं ने एक ने तो थप्पड़ भी रसीद कर दिया वो रोने लगा चिल्लाया मुझे मत मारो रास्ते जा रहे एक भल– मानुस ने बीच बचाव किया – पूछा आक्रोशित व्यक्तियों को एक बोला– इसने चुराया है क्या चुराया है? राहगीर बोला– गुस्साया दल नहीं बता रहा था कि "चुराया क्या है"? बार–बार पूछने पर उस चोर ने ही बोला –बोलते क्यों नहीं? बताते क्यों नहीं? मैंने चुराया क्या है? असभ्य बनकर मेरे पीछे दौड़ पड़े वो भी लेने को "एक रोटी" भला मानुस बोला– "रोटी"? हाँ–हाँ रोटी, रोटी पापी पेट के लिए चुरायी मैंने रोटी जब ये

उसके कुत्ते को प्यार से डाल रहे थे–रोटी तब मेरी भूख ने ईर्ष्या की –कुत्ते से भूख रोक नही पायी–मेरी नियत को और चुरा ली "बेचारे कुत्ते से रोटी।"

राहगीर उन व्यक्तियों को धिक्कारता हुआ चला गया। वे व्यक्ति भी क्षमा मांगने के बजाय गुर्राते हुए चल पड़े वो गरीब बेचारा सड़क पर बैठ गया रोने के लिए आज के सभ्य समाज में इंसान इंसान का कुत्ते से भी कम आकलन करें तो क्या होगा ?

हम आप से ही पूछ रहे हैं आखिर कसूर क्या था? सिर्फ भूख और कुत्ते से चुरायी रोटी हम में वो "मानवीयता" होनी चाहिए –अगर किसी दीन–दुःखी को आवश्यकता है सहारे की और हम उसे देवें सहयोग तो तो इस धरती पर जीवन जीने का आयेगा मजा वरना हम भी उसी भीड़ के हिस्से हो जायेंगे जो मरकर भी अपने नाम की तरंगे नहीं छोड़ जाते। आवश्यकता से अधिक यदि प्रभु ने हमें दिया तो निश्चित वो ईश्वर आपके माध्यम से गरीबों, असहायों विकलांगों के लिए नेक कार्य करवाना चाहता है –यदि ऐसा न हो तो हम भी तो उस गरीब व्यक्ति की तरह हो सकते थे।

हमारे पूर्व जन्म का पुण्य हमें– नेक व धन–धान्य पूर्णकर रहा है। हमारा कुछ धन नेकी में डालें, ताकि व्यक्ति समाज व देश–विकास की ओर बढ़े।

–कैलाश 'मानव'

सच्चा राजा

बंगाल में गुष्करा एक छोटा–सा स्टेशन है। एक दिन रेलगाड़ी आकर स्टेशन पर खड़ी हुई। उतरने वाले झटपट उतरने लगे और चढ़ने वाले दौड़–दौड़कर गाड़ी में चढ़ने लगे। एक बुढ़िया भी गाड़ी से उतरी। उसने अपनी गठरी खिसका कर डिब्बे के दरवाजे पर तो कर ली थी; किन्तु बहुत चेष्टा करके भी उतार नहीं पायी थी।

कई लोग गठरी को लाँघते हुए डिब्बे में चढ़े और डिब्बे से उतरे। बुढ़िया ने कई लोगों से बड़ी दीनता से प्रार्थना की कि उसकी गठरी उसके सिर पर उठाकर रख दें; किन्तु किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। लोग ऐसे चले जाते थे, मानो बहरे हों।

गाड़ी छूटने का समय हो गया।

बेचारी बुढ़िया इधर–उधर बड़ी व्याकुलता से देखने लगी। उसकी आँखों से टप–टप आँसू गिरने लगे।

एकाएक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे एक सज्जन की दृष्टि बुढ़िया पर पड़ी। गाड़ी छूटने की घंटी बज चुकी थी; किन्तु उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। अपने डिब्बे से वे शीघ्रता से उतरे और बुढ़िया की गठरी उठाकर उन्होंने उसके सिर पर रख दी। वहाँ से बड़ी शीघ्रता से अपने डिब्बे में जाकर जैसे ही वे बैठे, गाड़ी चल पड़ी। बुढ़िया सिर पर गठरी लिये उन्हें आशीर्वाद दे रही थी – 'बेटा ! भगवान् तेरा भला करे।'

तुम जानते हो कि बुढ़िया की गठरी उठा देने वाले सज्जन कौन थे? वे थे कासिम बाजार के राजा मणीन्द्रचन्द्र नन्दी, जो उस गाड़ी से कोलकाता जा रहे थे।

सचमुच वे राजा थे, क्योंकि सच्चा राजा वह नहीं है जो धनी है या बड़ी सेना रखता है। सच्चा राजा वह है, जिसका हृदय उदार है, जो दीन–दुःखियों और दुर्बलों की सहायता कर सकता है?

ऐसे सच्चे राजा बनने का तुम में से सबको अधिकार है। तुम्हें इसके लिये प्रयत्न करना चाहिये।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश जयपुर पहुँचा तो उसे पता लगा कि उसकी नियुक्ति जूनियर एकाउन्ट्स ऑफिसर के पद पर उदयपुर में हो गई है। वह इन्सपेक्टर का पद छोड़ना नहीं चाहता था, एक बार तो उसके मन में आया कि जे.ए.ओ. पद लेने से इन्कार कर दे मगर बाद में जब उसने गंभीरता से इस पर मनन किया तो यह युक्तिसंगत नहीं लगा क्योंकि जे.ओ.ए. को इन्स्पेक्टर से ज्यादा वेतन मिलता था। उससे उदयपुर जाने का तय कर लिया। उदयपुर, हालांकि भीण्डर के समीप था फिर भी उसके लिये अनजान था, बड़ा शहर था, कैलाश छोटा था तब जरूर एकाध बार जाना हुआ होगा।

कैलाश के बड़े भाई साहब की शादी उदयपुर में ही हुई थी। भीण्डर से बारात में वह भी आया था। बारात फतह मेमोरियल धर्मशाला में ठहरी। यह 1962 की बात है, तब वह नवीं कक्षा में पढ़ता था। तब प्राईवेट बसें ही चलती थी। भाई साहब बाद में कोटा में बस गये। इसके पहले भी वह एक बार उदयपुर आया था, तब तो और भी छोटा था। बस स्टेण्ड पर जाकर उदयपुर का टिकट लिया, टिकिट पौने दो रुपये का था मगर उसके पास छुट्टे पैसे नहीं थे। दस का नोट था, वही पैसे देकर उसने बाकी पैसे मांगे तो कन्डक्टर ने कहा खुल्ले नहीं हैं, बाकी पैसे उदयपुर पहुंचने पर वह दे देगा। कैलाश सहम गया, उदयपुर पहुँचने में तो बहुत देर लगेगी, उसने अपना हाथ बढ़ाये ही रखा तो कन्डक्टर को गुस्सा आ गया, जोर से बोला–दे देंगे ना, खाकर भाग थोड़े ही जाउंगा।

अंश - 84

भोजन और स्वास्थ्य

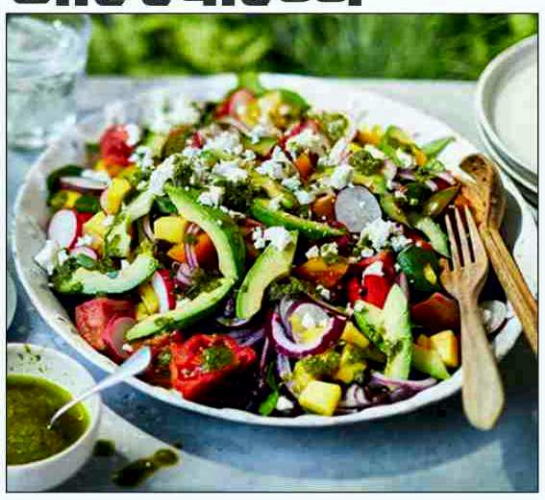

भोजन हर प्राणी के लिए जरूरी है। भोजन और स्वास्थ्य का अन्योन्याश्रित संबंध है। भोजन के दौरान एवं उसके बाद छोटी–छोटी बातों का ध्यान निश्चत रूप से हमें जीवन भर चुस्त, दुरुस्त और स्वस्थ बनाए रख सकता है।

भोजन में सिर्फ उचित मात्रा में पोषक तत्व शामिल कर लेने से स्वास्थ्य ठीक रहने का भरोसा नहीं किया जा सकता। स्वास्थ्य संबंधी अनेक परेशानियां भोजन के समय उचित सावधानी न बरतने से पैदा होती हैं। इसी तरह भोजन के बाद सैर को लेकर भी सही जानकारी न होने से कई परेशानियां होती हैं। जब हम भोजन का निवाला मुंह में रखते हैं, तब लार भोजन में उपस्थित स्टार्च को छोटे–छोटे कणों में विभाजित करती है। इसके बाद आहार इसोफैगस यानी भोजन नली के माध्यम से पेट में पहुंचता है। पेट की अंदरूनी परत भोजन को पचाने के लिए पाचक रस यानी डाइजेस्टिव जूसेज बनाती है। इसमें से एक स्टमक एसिड है। कई लोगों में निचली भोजन नली ठीक से बंद नहीं होती। अक्सर खुली रह जाती है, जिससे पेट का रसायन वापस बह कर इसोफैगस में चला जाता है।

इससे छाती में दर्द और तेज जलन होती है। इसे ही जीईआरडी या एसिड रिफ्लक्स कहते हैं। कभी न कभी हर किसी को इस समस्या का सामना करना पड़ जाता है। शहरी लोगों ने अपने को इतना व्यस्त कर लिया है कि वे न तो समय पर भोजन कर पाते हैं और न उनके सोने–जागने का कोई समय निश्चित है। दफ्तर लिए जाते हड़बड़ी में नाश्ता करते हैं। तली, भुनी चीज़ें खाना, देर शाम भोजन करना और सो जाना। इन सब कारणों से सेहत बिगड़ती है। जबकि तमाम व्यस्तताओं के बीच अगर थोड़ा भी सतर्क रहें तो स्वस्थ्य जीवन जीया जा सकता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

इधर बगीचा घण्टा दो–तीन घण्टा रोज श्रमदान पसीना आता, आनन्द आता। ये दिव्यता है। जब हॉस्पीटल पांच– चार दिन लगातार गये तो मैंने कमला जी को कहा एक झोला बना दो–झोला। दो रुपये की एक किलो मोसम्बी आती थी– उस समय। एक किलो में पांच– छः मोसम्बी आ जाती थी। एक किलो मौसम्बी खरीद ली। एक रुपये का बिस्कुट का डिब्बा आता था। आजकल पांच–छः में आता है। बिस्कुट का डिब्बा खरीद लिया। गीता प्रेस की पुस्तकें तो थी। बापूजी ने कृपा करके पुस्तकें दे दी थी, कुछ पुस्तकें और मंगा ली थी।

दो–चार पुस्तकें रखी उस समय। आनन्द की लहरें करके, दस पैसे की पुस्तक आती थी। ऐसी लगन लगी कि दौ सौ पुस्तके मंगा ली थी कि, 10 पुस्तक का एक रुपया, बीस रुपये की दौ सौ पुस्तकें, दस पैसे की एक। जो भी मिला आनन्द की लहरें लो भाई, अच्छी चीजें पढ़ना। हॉस्पीटल में एक बजे से दो बजे लंच में चले जाते। अब लंच तो करना नहीं वो तो रोटी तो खाकर आते। नौ साढ़े नौ बजे आते थे, एक से दो बजे तक आनन्द की लहरें हृदय में भी उठती थी, पुस्तकें भी बांटते। दो– तीन दिन, पहले दिन गये तो नये रोगी भर्ती हुए थे ऊपर से नीचे तक देखते रहे। मैंने कहा– राम राम बासा। यों देखते रहे।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 211 (कैलाश 'मानव')

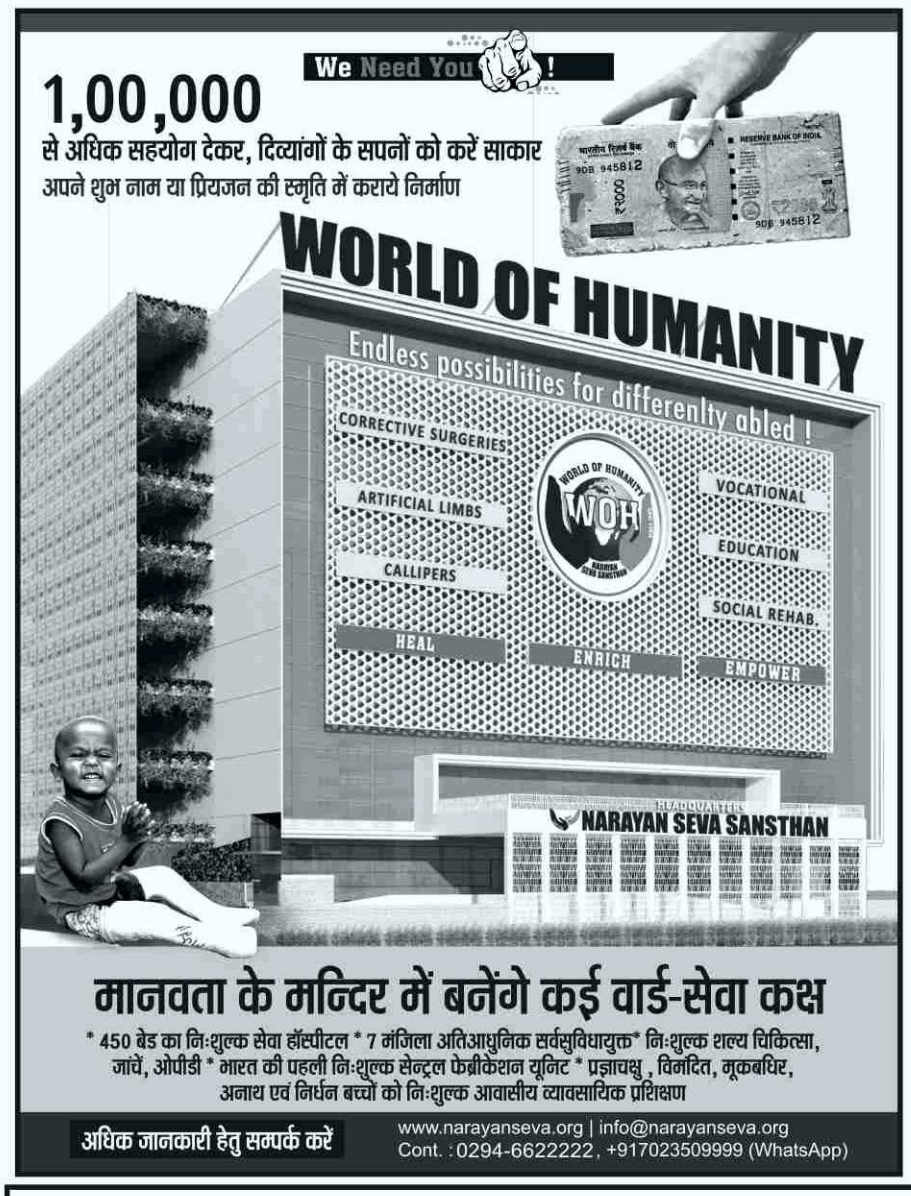

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023